

**छन्दःपरिभाषा,प्रमुख मात्रिक छन्दः एक अध्ययन****बलदेव राम****सह आचार्य,हिन्दी, राजकीय कन्या महाविद्यालय, मेड़ता सिटी**

छन्द शब्द के मूल में चद् धातु का पुट होता है जिसका अर्थ है प्रसन्न करना। चद् से छद् बनकर छन्द संज्ञा शब्द में निष्पन्न हो जाता है जिसका अर्थ है जो प्रसन्न करे वह छंद है। छन्द पद्य का पर्यायवाची है। विश्व के प्राचीन साहित्य वेद को छंदस भी कहा गया है, जिसमें सात छन्द हैं। छन्दशास्त्र के प्राचीनतम आचार्य पिंगल हैं। अतएव उनके नाम पर इसे पिंगलशास्त्र भी कहा जाता है।

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार:—अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रा गणना तथा यति—गति से सम्बद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्य रचना छंद कहलाती है।

जिस शब्द योजना में यति गति, वर्णों एवं मात्राओं का स्थान नियत हो उसे छंद नाम से विभूषित किया जाता है।

यदि व्याकरण गद्य को नियंत्रित करती है तो छन्द शास्त्र पद्य का नियामक है। पद्य रचना का ज्ञान छन्द शास्त्र की जानकारी के बिना नहीं हो सकता। छन्द युक्त रचना पाठकों को अधिक प्रभावित करती है। गद्य में जो शुष्कता होती है वह छन्द के कारण पद्य में नहीं होती है। छन्द युक्त रचना हृदय पर सीधा प्रभाव डालती है छन्द विहीन रचना हमें उतना प्रभावित नहीं कर पाती। इससे कविता में गेयता आती है और कविता में स्थायित्व आता है।

छन्द के अंगों में गण का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है छन्दशास्त्र में तीन वर्णों के समूह को गण कहा जाता है। गण आठ प्रकार के होते हैं इसमें प्रथम आठ अक्षर गणों के सूचक प्रथम अक्षर हैं तथा अंतिम दो अक्षर लघु एवं गुरु को संकेतित करते हैं।

प्रमुख सूत्र:—

यमाता राज भान सलगा।

गणों के नाम	चिह्न	मात्रा संख्या	उदाहरण
यगण	ISS	5	यमाता, करौली
मगण	SSS	6	मातारा, राजाजी
तगण	SSI	5	ताराज, सामान
रगण	SIS	5	राजभा, कामना
जगण	ISI	4	जभान, किताब
भगण	SII	4	भानस, आनन
नगण	III	3	नसल, कमल
सगण	IIS	4	सलगा, कमला

ल-लघु

ग-गुरु

प्रमुख मात्रिक छन्द

01. **चौपाई:-** यह सम मात्रिक छन्द है इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। पदान्त में यति होती है।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।

॥ ॥S॥ S॥ ॥ S॥ -16 मात्रा

जय कपीश तिहुँ लोक उजागर॥

॥ ॥S॥ ॥ S॥ ॥S॥ -16 मात्रा

राम दूत अतुलित बल धामा

S॥ S॥ ॥॥ ॥ SS -16 मात्रा

अंजनि पूत पवन सुत नामा

S॥ S॥ ॥ ॥ SS -16 मात्रा

02. **दोहा:-** यह अर्द्ध सममात्रिक छन्द है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में 13 मात्राएँ होती हैं तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में ॥ मात्राएँ होती हैं। यति चरण के अंत में होती है।

श्री गुरु चरण सरोज रज,निज मन मुकुर सुधारि।

S ॥ ॥ ॥ ॥S॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥S॥

बरनउ रघुवर विमल जस,जो दायक फल चारि॥

॥॥ ॥॥ ॥ ॥ ॥ S S॥ ॥ S॥

03. **सोरठा:-** यह अर्द्ध सममात्रिक छन्द है। इसके प्रथम एवं तृतीय चरण में ॥ मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में 13 मात्राएँ होती हैं। यह दोहा का विपरीत है।

सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तन पुलक भर।

॥ ॥ S॥ ॥ S॥ ॥ ॥S॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सरद सरोरुह नैन,तुलसी भरे सनेह जल॥

III ISI SI IS IS SI II

04. **बरवै छन्दः**—यह अर्द्धसममात्रिक छन्द है। इसके विषम चरणों में 12 मात्राएं एवं समचरणों में 7 मात्राएं होती हैं। इसे ध्रुव व कुरंग छंद के नाम से भी जाना जाता है।
सबसे मिलकर रह मन, बैर बिसार।

IS IIII II II SI IS

12+07=19 मात्रा

दुर्लभ नर तन पाकर, कर उपकार।

SI II II II SI II IS

12+07=19 मात्रा

05. **रोलाः**—सम मात्रिक छन्द है जिसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं तथा 11 और 13 पर यति होती है

नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुन्दर है।

SSII ISII III II II SII S 11+13=24 मात्रा

सूर्य चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।

SI SI II III SIS SSII S 11+13=24 मात्रा

नदियाँ प्रेम—प्रवाह, फूल तारा मण्डल है।

IS SI IS SI SS SII S 11+13=24 मात्रा

बन्दीजन खगवृन्द, शेष फन सिंहासन है।

SSII ISII SI II SSII S 11+13=24 मात्रा

06. **चौपईः**— यह सममात्रिक छन्द है। चार चरणों में गाया जाने वाला यह छन्द पदान्त में यति से युक्त होता है। प्रत्येक चरण में 15 मात्राएं होती हैं। प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु(S)लघु(I) अनिवार्य रूप से होते हैं।

बापू थे तुम पुरुष महान

SS S II III IS — 15 मात्रा

कीया विलक्षण तुमने त्राण

SS IIII IS SI — 15 मात्रा

जननी जन्मभूमि की पीर

IS SII S SI — 15 मात्रा

तुमने हरी मुक्त कर वीर

IS IS SI II SI — 15 मात्रा

07. **आल्हा छन्दः**— सोलह और पन्द्रह मात्राओं पर यति के साथ 31 मात्राओं का आल्हा छन्द होता है। वीर छन्द के नाम से भी जाना जाता है

धीरे-धीरे संसय से उठ, बढ़ अपयश से शीघ्र अछोर।

SS SS SII S II, II IIII S SI ISI

16 मात्रा

15 मात्रा = 31 मात्रा

08. **हरिगीतिकाः**—यह सममात्रिक छन्द है। प्रत्येक चरण में 28 मात्राएं होती हैं। यति 16 और 12 पर होती है तथा अंत में लघु और गुरु का प्रयोग होता है।

संसार की समर स्थली में, धीरता धारण करो।

SSI S IIS IS S, SIS SII IS 16+12=28 मात्रा

09. **कुण्डलियाँ**—यह मुख्यतः 6 चरणों का छन्द है। दोहा व रोला के योग से बनता है। पहले दो चरण दोहे के तथा अंतिम चार चरण रोला के होते हैं। दोहे का अंतिम चरण रोला के प्रारम्भ में आता है तथा दोहे का प्रथम शब्द रोला के अंत में आता है।

गुन के गाहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय।

II S SII III II II II IS I SI 13+11=24 मात्रा

जैसे कागा –कोकिला, सबद सुनै सब कोय॥

SS SS SIS III IS II SI 13+11=24 मात्रा

सबद सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।

III IS II SI SIS IS ISII 11+13=24 मात्रा

दोउ के एक रंग, काग सब भये अपावन

SI S SI SI SI II IS ISII 11+13=24 मात्रा

कह गिरिधर कबिराय, सुनौ हो ठाकुर मन के।

II IIII IISI IS S SII II S 11+13=24 मात्रा

बिन गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के॥

II II IS I SI III II SII II S 11+13=24 मात्रा

10. **छप्पयः**—यह विषममात्रिक छन्द है। इसमें छः चरण होते हैं। प्रथम चार चरण रोला के तथा अंतिम दो चरण उल्लाला के होते हैं।

नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुन्दर है।

SSII IIS III II II SII S 11+13=24 मात्रा

सूर्य चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।

SI SI II III SIS SSII S	11+123=24 मात्रा
नदियाँ प्रेम प्रवाह,फूल तारामण्डल हैं।	
IIS SI ISI SI SSSI S	11+13=24 मात्रा
बन्दी विविध विहंग,शेष फन सिंहासन है।	
SS III ISI SI II SSII S	11+13=24 मात्रा
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेश की।	
IIS IISI ISI S IISS II SI S	15+13=28 मात्रा
हे मातृ भूमि तू सत्य ही,सगुण मूर्ति सर्वेश की।	
S SI SI S SI S III SI SS S	15+13=28 मात्रा

11. **उल्लाला**—अर्द्ध सममात्रिक छंद है। इसके विषम चरणों में 15 मात्राएं तथा समचरणों में 13 मात्राएं होती हैं। पदान्त में यति का विधान है।

हम खेलें कूदें हर्षयुत	
II SS SS SIII	15 मात्रा
जिसकी प्यारी गोद में	
IIS SS SI S	13 मात्रा
हे मातृभूमि तुझको निरख	
S SISI IIS III	15 मात्रा
मग्न क्यों न हो मोद में॥	
SI S I S SI S	13 मात्रा

सन्दर्भ

01. राजस्थानी साहित्य,कोष व छन्दशास्त्र—नारायण सिंह भाटी।
02. छन्द ज्ञान(भाग-1)— दिलीप कुमार पाठक सरस।
03. छन्द विन्यास (काव्य रूप) संजीव कुमार चौधरी।
04. हिन्दी छन्द मंजूषा—आचार्य अनमोल।
05. छन्द विधान एवं सृजन—श्री भगवान दीक्षित।
06. छन्दो मंजरी,जगन्नाथ शास्त्री तैलङ्ग,भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी,2013।
07. ध्वन्यालोक,आनन्दवर्धन,आचार्य विश्वेश्वर,ज्ञान मण्डल लि.,वाराणसी।
08. वृत्त रत्नाकर,केदारभट्ट,सम्पादक,ब्रह्मानन्द त्रिपाठी एवं बलदेव उपाध्याय,चौखम्भा सुर भारती प्रकाशन,वाराणसी।
09. साहित्य दर्पण,विश्वनाथ,व्याख्याकार डॉ सत्यव्रत सिंह चौखम्भा विद्या भवन,वाराणसी,1976।
10. अलंकार—छन्द पारिजात—प्रो रमेश चन्द्रा डॉ.हेमलता।